IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# प्राचीन एवं आधुनिक बाल कथा- साहित्य- एक समीक्षा

**शोधार्थी**- निशा जैन,
हिंदी विभाग
**शोध निर्देशिका**- डॉ. पिंकी पारीक
**विश्वविद्यालय**- वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

प्रस्तावना - शैशवास्था पार करते ही बच्चोँ की मानसिकता में बदलाव आता है। उनके मन में अनेक सवाल हिलोरे खाने लगते है। जिनके जवाब पाने की धुन में कल्पना की ओर उड़ान भरने लगते है। यही कल्पनाएँ जिज्ञासा के रूप में परिवर्तित होती है। बच्चोँ की इसी जिज्ञासा व भूख को शांत करने के लिए बाल-साहित्य़ लिखने की आवश्यकता पड़ी। दूसरे अर्थ में देखा जाए तो बाल-साहित्य़ बच्चोँ को संस्कारित करने में अपना महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी बात को मद्देनजर रखते हुए बहुत से लेखकों के प्रयास से बाल-साहित्य़ की कला में निरंतर विकास हुआ है जो रंग बिरंगी पुस्तकों के द्वारा बच्चोँ की बौधिक लालसा अथवा मानसिक भूख को शांतकर पाता है। इस संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अपनी- अपनी समझ के अनुसार इसे अनेक रुपों में परिभाषित किया है जैसे- विष्णु पांडे के अनुसार "बाल साहित्य वो है जो बच्चोँ की जिज्ञासाओं को शांत कर उनकी रुचियों में परिष्कार लाए।"

"कल्पना बालक का संसार है उसका स्वर्ग है वास्तविक संसार बड़ा कठोर है कृष्णा के पंख में चढ़कर बालक अपने चंद्र लोक की सैर करता आता है यदि हम उसे इस सुख से वंचित कर दे तो उसका जीवन आनंद रहित तथा नीरज हो जाता है।" रविंद्र नाथ टैगोर"

परिवर्तन प्रकृति का नियम है यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जिससे कोई भी अछूता नहीं रह सकता फिर चाहे मानव जीवन हो या हमारा साहित्य। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस तरह की कहानियाँ बच्चों को पलायन वाली बना देती है क्योंकि वह इस तरह की बातों को सत्य मानकर सहज ही स्वीकार कर लेते हैं। साहित्य अपने समाज में आ रहे परिवर्तन का साक्षी होता है और यह बात हर तरह के साहित्य पर लागू होती है। फिर चाहे वह बाल कथा साहित्य ही क्यों ना हो। परिवर्तन से पूर्व बाल कथा साहित्य का स्वरूप कैसा था? क्यों था? परिवर्तन करना क्यों जरूरी समझा गया? परिवर्तन से बालक पाठक को पर क्या प्रभाव पड़ा? आदि संभावनाएँ सोचनीय है। प्राचीन एवं आधुनिक रूप से देखे तो इसके अपने अपने विचार और अपना अलग ही नजरिया है।

प्राचीन बाल-कथा साहित्य-

प्राचीन बाल कथा साहित्य अपने प्रवृत्ति पर विशेषताओं के कारण अपनी अलग पहचान रखता है। पूर्व काल का बाल कथा- साहित्य अधिकतर मौखिक रूप में ही होता था, जिसे बाद में लिखित रूप दिया गया जिनमें उत्सुकता और रोंगटे खड़े कर देने वाली कहानियाँ राजा- रानी, राजकुमार- राजकुमारी और राक्षस और परी कोतुहल के साथ उपस्थित थे। जंगल में राक्षसों भयानक जानवरों से भिड़ंत जैसे साहसिक कहानियाँ बच्चों को रोमांचित करती थी यह कहानियाँ घटनाओं का वृतांत प्रस्तुत करती थी।

व्यापारिक, धार्मिक, रोजगार तलाशने के उद्देश्य से की गई यात्राएँ जीवन का एक हिस्सा बन जाती थी। जहां एक तरफ धार्मिक ग्रंथों एवं जातक कथाओं में वर्णित धार्मिक आख्यान भी उपदेश रूप मात्र प्रस्तुत किए जाते थे, वहीं दूसरी तरफ लोक प्रचलित दंत कथाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान था। प्रकृति में कई रहस्य छुपे होते थे जिनका समाधान अपने अपने बौद्धिक स्तर पर ढूंढा जाता था। यह सभी विषय बाल कहानियों में उभर कर सामने आते थे।

प्राचीन बाल कथा साहित्य में राजा- रानियों, सुंदर राजकुमार- राजकुमारियों, वीर न्यायप्रिय शासकों, दानवीर राजाओं की कथाएं मुख्य तौर पर प्रचलित थी जो उनके मानवीय गुणों को उजागर करती थी जिससे बालक साहस समझदारी जैसे गुणों को सीखता था। इस बार का संदर्भ में शर्मा चंद्र ने कहा है, "मैं समझता हूं कि यह लोक कथाएं हमें उत्सुकता जिज्ञासा और उस अज्ञात संवेदनशीलता को स्पर्श करती है जिसे अन्य साहित्य नहीं करता। साहस, दुस्साहस, चमत्कार, बुराई पर भलाई पर जीत यह सभी बातें बच्चों को एक संतोष देती थी।

इतिहास में राजा हरिश्चंद्र, दशरथ जनक जैसे राजपूत एवं पृथ्वीराज चौहान जैसे इतिहास पुरुषों के किस्से सुनकर बालक अभिनीत करता है जिससे उन्हें विशेष आनंद प्राप्त होता है।

प्राचीन बाल कथा साहित्य जैसे बेताल पच्चीसी, विक्रम बेताल आदि दानवी शक्तियों से पूर्ण चमत्कारी कहानियाँ प्रचलित है। जब चौपालों और घरों में भूत- प्रेत एवं राक्षसों की कहानियां सुनाई या दिखाई जाती थी तब बाल श्रोताओं की आंखें फटी की फटी रह जाती थी। कथा के अंत में जब राक्षस विनाश के निकट पहुंचने लगता था तब पाठक वर्ग (बालक) सुकून भरी सांस लेता था। असुर, राक्षस, पिशाच , जिन्न, भूत- प्रेत जादुई शक्तियाँ यह सभी बुराइयों एवं तिरस्कार स्वरूप माने जाते थे।

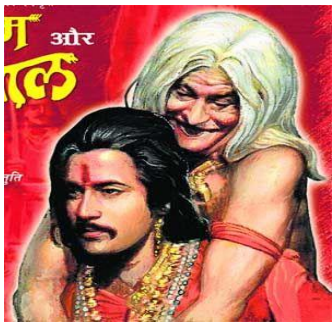


Source of the image:
https://in.pinterest.com/pin/46513808622222047

अतः इस प्रकार बालक डर से परे एक आजाद संसार में विचरण करने लगता है मैं मान लेता है कि बुराई पर अच्छाई की जीत निश्चित है और इस तरह धर्म ईश्वर और सब वृत्तियों की तरफ उसका विश्वास अपने पैर जमाने लगता है।

समाज अपनी सोच से अभिभूत होकर हमेशा दो वर्गों में विभाजित रहा है। बस खेल तो साहित्यकारों एवं कथाकारों ने अपने अपने दृष्टिकोण से खेला है जो कल पुराना था वह आज नया है, बस बदला है तो परिवेश। संसार में बुराई और अच्छाई, ईमानदारी और बेईमानी तब भी थे और अब भी हैं, अच्छाई तब भी जीतती थी और आज भी जीतती है। अब उन्हें नए रूप में प्रस्तुत करना ही कथाकार का उद्देश्य मात्र प्रयास है।

<u>आधुनिक बाल कथा साहित्य</u>

अगर हम आधुनिक कथा साहित्य की बात करें तो इसे भी कई काल खंडों में बांटा गया है जैसे मध्ययुगीन अर्थात स्वतंत्रता पूर्वक साहित्य है। आधुनिक अर्थात स्वतंत्रता पश्चात साहित्य और समकालीन कथा साहित्य।

स्वतंत्रता पूर्वक हिंदी बाल साहित्य में रोचक कहानियाँ और प्रेमचंद कृत 'जंगल की कहानियाँ' रोचक यात्रा वृतांत जीवनियाँ और जानकारी पूर्ण लेख भी प्रकाशित हुए।

द्विवेदी युग में हिंदी बाल साहित्य का विकास तेजी से हुआ। इस समय में अनेक लेखकों ने बाल कथा साहित्य के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाई जिनमें यह कुछ प्रमुख थे - रविंद्र नाथ टैगोर, प्रेमचंद, भारतेंदु द्विवेदी जी, भगवती प्रसाद वाजपेई आदि।

स्वतंत्रता उत्तर काल में बाल कथा साहित्य में नई-नई विचारधाराओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर उसे बढ़ाया। बच्चों के लिए अलग किस्म के बाल कथा साहित्य की जरूरत महसूस की जाने लगी। सरकार द्वारा बालभारती पत्रिका के प्रकाशन का काम शुरू हुआ। इस काल में बाल कथा साहित्य को ऊंचा उठाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कुछ लेखकों में विशेष थे -डॉक्टर हरे कृष्ण देवसरे, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, विनोद पांडे इत्यादि।

हर समाज के अपने राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदर्श होते हैं। इन्हें आदर्शों और नैतिक मूल्यों में देश और वातावरण के अनुसार परिवर्तन भी जरूरी है। जैसा कि हमने पहले कहा है कि परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है और इसी अनुसार बाल कथा- साहित्य में भी एक बड़ा परिवर्तन आना आवश्यक था। यही बात आधुनिक बाल कथा साहित्य के परिपेक्ष में भी उठने लगी कि बाल कथा साहित्य का प्राचीन स्वरूप को बदला जाए। ऐसा बाल कथा- साहित्य रचा जाए जो वर्तमान समस्याओं से अलग ना हो। इस परिवर्तन का मूल उद्देश्य था वर्तमान समाज में उनसे जुड़ी समस्याओं, सामाजिक आचार- व्यवहार की स्थिति, नैतिक मूल्य आदि से बालकों को परिचित कराना। जिसका जिम्मा आधुनिक बालकथा साहित्यकारों ने अपने कंधों पर लिया।

पुराने जमाने में जहां अंधविश्वास ठगी भूत-प्रेत चमत्कार आदि कहानियाँ अंधविश्वासों का पोषण करती थी, अब इस प्रथा को तोड़कर आगे बढ़ना था। बच्चों को वास्तविक जीवन के कष्टों से संघर्ष करना सिखाना था। हालांकि कई मनोवैज्ञानिकों ने सीधे-सीधे बच्चों को झूठे परीलोक में विचरण करने के बाद उन्हें यथार्थ के पहाड़ पर पटकना सही नहीं समझा इसलिए उन्होंने परीकथा, टार्जन, फैंटम, शक्तिमान, सोनपरी, शाकालाका बूम बूम आदि कहानियों के माध्यम से परिस्थितियों के मद्देनजर परिवर्तन की जरूरत महसूस कर उन्हें बदला। इससे यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं है कि पाठकों को अपने इतिहास या प्राचीन संस्कृति से विमुख रखा जाए किंतु 'अति सर्वत्र वर्जयते' वाली कहावत को ध्यान में रखकर उन्हें पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि समस्याओं से जागृत कराना उतना ही आवश्यक है जिससे वे इन समस्याओं का निवारण कर जीने की कला का ज्ञान प्राप्त कर सके।

आधुनिक बाल कथा साहित्य में यथार्थवाद की सनिकटता मिलती है। इस काल की कहानियाँ कल्पना, प्रतिभा व आदर्श अनुरूप वस्तुओं का अनुकूल रूप प्रस्तुत करती है। यथार्थवाद साहित्यकार विश्व में विद्यमान बुराइयों पर पर्दा डालने की अपेक्षा उसका चित्रण करते हैं। उनका यथार्थ धरती में ही जन्म लेता है और पनपता है जैसे कक्षा का एक छात्र अध्यापक द्वारा उसके उदास होने का कारण पूछने पर सीधे शब्दों में अपने घर की परिस्थिति, घर में हो रहे रूखे व्यवहार का कारण स्पष्ट करता है। अतः आधुनिक बाल कथा साहित्य भाव बोध से प्रभावित है।

बाल कथा साहित्य में हो रहे प्रयासों का औचित्य निर्विवाद है। भूत प्रेत की कहानियों से निकलकर मस्तराम कपूर, विष्णु प्रभाकर, हरिकृष्ण देवसरे, मनोहर शर्मा, रविंद्र नाथ टैगोर, प्रेमचंद आदि कथाकारों ने कहानियों की परंपरागत भाषाओं को बदलकर उन्हें आधुनिक एवं यथार्थवाद रूप दिया। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक घर, मोहल्ला, स्कूल, दोस्त, बाजार आदि से संबंधित समस्याओं और परिवेश को दिखाती कहानियों को बाल पाठकों ने अपनाया और सराहा भी।

आधुनिक बाल कथा साहित्य में वैज्ञानिकता का समावेश भी देखने को मिलता है। विज्ञान के इस युग में जहां आवश्यक है कि बच्चे विज्ञान के चमत्कारों से भरी दुनिया के बारे में रोज के नवीन जानकारी प्राप्त कर जिज्ञासाओं को शांत करें। जिसके लिए कथाकार ने वैज्ञानिकता का समावेश करके अनेक रचनाएं रची। पाठक अपनी पुरानी परंपराओं को छोड़कर एक नए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त हो जो प्रत्यक्ष उदाहरण का अनुसरण कर अपना मनोरंजन कर सके, उसे वैज्ञानिक कथा साहित्य में मिला है। अतः वैज्ञानिक कथा साहित्य में भौतिकता, रसायनिकता, जीव, वनस्पति, गणित आदि तत्वों का समावेश रहता है।

आधुनिक बाल कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ है गुलामी को सहते हुए स्वतंत्रता की भावना का विकास देश की महानता का गुणगान एकता की चेतना आदि भावनाएँ बाल कथा साहित्य में देखने को मिली है जिसने बच्चे के मनोबल को हर कदम पर बढ़ाया है।

## उपसंहार

अतः अंत में हम कह सकते हैं कि हिंदी बाल कथा साहित्य का एक विस्तृत भूखंड है जो असीम है। इसके पर्यवेक्षण से पता चलता है कि यह अलौकिक से लौकिक, लौकिक से मानव और मानव से उसके मन और अंतर्मन के अंतराल तक की विकास यात्रा है। परिणाम स्वरुप जहां कल्पनाओं के पर लगाकर उड़ने वाली परी कथाएँ बाल मन को आकृष्ट करती है तो वहीं दानव के दुर्गम दुनिया चमत्कार को समाविष्ट करती है। इसी तरह पशु पक्षियों को पास से अनुभव करने देती है तो राजसी ठाठ बाट को सोचने समझने का अवसर देती है। प्राचीन दृष्टि का बाल कथा साहित्य सामान्य जन को प्रियदर्शी समझकर ही बुना जाता था वही आधुनिक साहित्यकारों ने आम आदमी को आधार बिंदु बनाकर उनकी कल्पनाओं के

साथ वास्तविकता का विधान, परंपरा के साथ विज्ञान का योगदान तथा मातृभूमि के साथ राष्ट्रीय भक्ति भावना का अभियान जोड़कर इस कथा साहित्य को कभी रुकने नहीं दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बाल साहित्य का चिंतन- डॉक्टर हरे कृष्ण देवसरे , मेघा बुक प्रकाशन प्रथम संस्करण 2000
2. हिंदी बाल साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन- मस्तराम कपूर अनामिका पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण 2015
3. हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श- उषा यादव एवं राज किशोर सिंह- सामयिक प्रकाशन संस्करण 2018
4. हिंदी बाल साहित्य परंपरा एवं प्रयोग- डॉक्टर ओम प्रकाश सिंह- अनुराग प्रकाशन
5. हिंदी साहित्य का इतिहास - विजेन्द स्नातक, साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण 1996
6. भारतीय बाल साहित्य- हरिकृष्ण देवसरे साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण 2016
7. आधुनिक हिंदी समीक्षा- निर्मला जैन, प्रेमशंकर साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण 1985
8. हिंदी बाल साहित्य प्राचीन एवं आधुनिक दृष्टि- डॉ अनिमेश कुमार जैन नीरज बुक प्रकाश, प्रथम संस्करण 2009
9. हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा- डॉक्टर श्री प्रकाश लोक भारती प्रकाशन
10. ई पत्रिका- हिंदी बाल साहित्य का ऐतिहासिक परिचय पर- http://oldror.lbp.world/UploadedData/6964.pdf